जप वाक्य तथा उनका भावार्थ

ओ३म्
हे परमेश्वर! आप सर्वरक्षक हैं हमारी सब दुःखों से रक्षा कीजिए।

ओ३म् आनन्दः
हे परमेश्वर! आप आनन्दस्वरूप हैं। हमें भी आनन्द दीजिए। हमें ऐसा ज्ञान, बल, सामर्थ्य दीजिए जिसके कि हम शीघ्र आपके आनन्द को प्राप्त कर सकें।

ओ३म् सच्चिदानन्दः
हे परमेश्वर! आप की सत्ता है, आप यहाँ विद्यमान हैं। आप चेतन हैं, आप हमारे कर्मों को जान रहे हैं। आप आनन्दस्वरूप हैं, हमें भी आनन्द दीजिए।

ओ३म् सत्यं ज्ञानं अनन्तं ब्रह्म
हे परमेश्वर! आप यहाँ विद्यमान हैं। आप अविनाशी हैं। आप ज्ञानस्वरूप हैं। आपकी विशालता की काई सीमा नहीं है। आप अनन्त तक विद्यमान हैं। आप सबसे महान हैं।

ओ३म् असतो मा सद् गमय।
हे सर्वरक्षक प्रभो! आप मुझे असत्य से छुड़ाकर सत्य की ओर ले चलिए।
हे सर्वरक्षक प्रभो! आप मुझे अनित्य सांसारिक अवस्था से हटाकर नित्य आत्मिक अवस्था में ले चलिए।

ओ३म् तमसो मा ज्योतिर्गमय।
हे सर्वरक्षक सर्वज्ञ प्रभो! आप मुझे अविद्या से छुड़ाकर विद्या की ओर ले चलिए।
हे सर्वरक्षक सर्वज्ञ प्रभो! आप मुझे मिथ्याज्ञान का विरोधी तत्त्वज्ञान प्रदान कीजिए।

ओ३म् मृत्योर्माऽमृतं गमय।
हे सर्वरक्षक आनन्दस्वरूप प्रभो! आप मुझे मृत्यु दुःख से छुड़ाकर मोक्षसुख की ओर, परमानन्द की ओर ले चलिए।
हे सर्वरक्षक आनन्दस्वरूप प्रभो! आप मुझे सांसारिक दुःखों से हटाकर नित्य सुख प्राप्त कराइए।